बी.एस.ओ.सी.-101 : समाजशास्त्र का परिचय - I
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : BASOH/ BAFSO
पाठ्यक्रम कोडः **BSOC-101**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एस.ओ.सी -101 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-27**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1. क्या समाजशास्त्र का इतिहास से कोई संबंध है? चर्चा कीजिए। 20

2. टैल्कॉट पार्सन्स के एजीआईएल मॉडल की व्याख्या कीजिए। 20

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3. सामाजीकरण के साधन के रूप में मास मीडिया की जांच कीजिए। 10

4. सामाजिक नियंत्रण से आप क्या समझते हैं? व्याख्या कीजिए। 10

5. भारत में संस्कृति की विविधता की चर्चा कीजिए। 10

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6. नृजातीयतावाद क्या है? 06

7. सामाजिक संस्था क्या है? 06

8. प्रमुख प्रस्थिति क्या है? 06

9. भूमिका सीख क्या है? 06

10. बड़े और छोटे समुदायों के बीच अंतर कीजिए। 06

1. क्या समाजशास्त्र का इतिहास से कोई संबंध है? चर्चा कीजिए। (20 अंक)

उत्तर

समाजशास्त्र और इतिहास दोनों मानव समाज को समझने वाले सामाजिक विज्ञान हैं। समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों, संस्थाओं, प्रक्रियाओं और संरचनाओं का अध्ययन करता है, जबकि इतिहास किसी समाज में बीते समय की घटनाओं, विचारों, संस्थाओं तथा परिवर्तनों की समयक्रम में पड़ताल करता है। दोनों का उद्देश्य मनुष्य के सामूहिक जीवन को समझना है। इसलिए इनका संबंध केवल विषयगत समानता का नहीं, बल्कि एक-दूसरे की पद्धतियों और निष्कर्षों को समृद्ध करने का भी है।

समाजशास्त्र और इतिहास का परस्पर संबंध

किसी भी सामाजिक संस्था का वर्तमान स्वरूप उसकी ऐतिहासिक यात्रा से अलग करके नहीं समझा जा सकता। उदाहरण के लिए भारत में जाति व्यवस्था, ग्राम समुदाय, भूमि संबंध और परिवार के बदलते रूपों का अध्ययन करते समय औपनिवेशिक नीतियों, सामाजिक सुधार आंदोलनों तथा स्वतंत्रता के बाद हुए कानूनी परिवर्तनों को देखना पड़ता है। इतिहास यह बताता है कि कोई व्यवस्था कब और किन परिस्थितियों में विकसित हुई; समाजशास्त्र यह जाँचता है कि वह व्यवस्था किन सामाजिक संबंधों के सहारे बनी रहती है और लोगों के जीवन पर क्या प्रभाव डालती है।

इसी प्रकार इतिहासकार जब किसान आंदोलनों, मजदूर संघर्षों, धार्मिक सुधारों या राष्ट्रवादी आंदोलनों का अध्ययन करता है, तब वर्ग, शक्ति, नेतृत्व, सामाजिक स्तरीकरण, सामूहिक पहचान और सामाजिक आंदोलन जैसी समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ उपयोगी होती हैं। सामाजिक घटनाएँ केवल शासकों या प्रमुख व्यक्तियों के निर्णयों से नहीं बनतीं; व्यापक सामाजिक परिस्थितियों का भी उन पर प्रभाव होता है।

विषय-वस्तु में समानताएँ

दोनों विषय परिवार, धर्म, राज्य, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, वर्ग, जाति और संस्कृति पर विचार करते हैं। दोनों मानते हैं कि सामाजिक जीवन में निरंतरता और परिवर्तन एक साथ उपस्थित रहते हैं।